केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो भारतीय बस्ती दैनिक वेब www.bhartiyabasti.com और उसका छपा संस्करण सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क-bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक
भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com
के लिये विज्ञापन बुक कराये।
विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम
सम्पर्क
मो0 9336715406
8400925463

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :48 अंक 41 सोमवार 31 अगस्त 2026 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

सुरंगों में फंसे 898 कर्मचारीः बाढ़ से 804 मौतों की पुष्टि

काठमांडू (आभा)। नेपाल में बाढ़ के बाद हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट्स की सुरंगों में फंसे कर्मचारियों को बचाने के लिए रेस्क्यू ऑपरेशन तेज कर दिया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक, करीब 898 कर्मचारी अब भी फंसे हैं, जबकि 361 कर्मचारियों को अब तक बचाया जा चुका है। त्रिशूली–3 'ए' हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट की सुरंग में चल रहे रेस्क्यू ऑपरेशन में कुछ कामयाबी मिली है। बचावकर्मी मशीनों की मदद से मिट्टी और गाद हटा रहे हैं। सुरंग में 6 इंच का छेद कर पाइप के जरिए हवा पहुंचाई जा रही है। अब इसे बड़ा कर मैनहोल बनाने की तैयारी है, ताकि बचाव दल सुरंग के अंदर जाकर लोगों की तलाश कर सके। 26 अगस्त को नेपाल की भोटेकोशी और त्रिशुली नदी में अचानक बाढ़ आ गई थी। इस आपदा में नेपाल में अब तक 788 लोगों की मौत हो चुकी है। वहीं, तिब्बत में मरने वालों का आंकड़ा 16 पहुंच गया है।

कुशीनगर, महराजगंज में 17 शव बरामद

कुशीनगर/ महराजगंज (आभा)। नेपाल में आई त्रासदी में लापता हुए कई लोगों का अब सुराग नहीं लगा है। अभी भी नेपाल से आ रहे पानी में लाशें बहकर भारत–नेपाल की सीमा पर बसे जिलों में पहुंच रहे हैं। चौथे दिन रविवार को बड़ी गंडक (नारायणी) नदी में चार शव बहकर आए। छितौनी तटबंध के भेड़ियारी ठोकर नंबर तीन के समीप एसडीआरएफ की टीम ने दो महिलाओं और दो पुरुषों के शव

नदी से बरामद किए। इन्हें मिलाकर कुशीनगर में अब तक 13 और महराजगंज में चार यानि कुल 17 शव बरामद हो चुके हैं। इन्हें सुरक्षित मोर्चरी में रखवा दिया गया है। पोस्टमार्टम–डीएनए सैंपलिंग के बाद महराजगंज में मिले चार शव नेपाल को सौंप दिए गए हैं।

कुशीनगर में रविवार को एसडीआरएफ की टीम भेड़ियारी ठोकर नंबर तीन के समीप नदी में निगरानी कर रही थी। इसी दौरान पानी में चार शव दिखाई दिए। टीम ने नदी में उतरकर दो महिलाओं और दो पुरुषों के शवों को बाहर निकाला। पुलिस ने आवश्यक लिखा–पढ़ी के बाद चारों शवों को मोर्चरी में भेज दिया। चार दिन में भेड़ियारी में 11 और कुल 13 शव आ चुके हैं, जबकि महराजगंज में चार शव बरामद हुए हैं। कुशीनगर में मोर्चरी फुल होने से बाकी शवों को गोरखपुर भेजवा दिया गया है। अब तक एक भी शव की पहचान नहीं हुई है।

वहीं महराजगंज में चार शवों का 72 घंटे इंतजार के बाद रविवार को पोस्टमार्टम कराया गया। साथ ही डीएनए सैंपलिंग के बाद महेशपुर बॉर्डर पर नेपाल पुलिस को चारों शव सौंप दिए गए। इनमें से तीन शव महिलाओं और एक पुरुष का है।

राष्ट्रीय महामंत्री हरीश द्विवेदी के भव्य स्वागत की तैयारी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। भारतीय जनता पार्टी के नवनियुक्त राष्ट्रीय महामंत्री पूर्व सांसद हरीश द्विवेदी के प्रथम जनपद आगमन पर भव्य स्वागत की तैयारी पूरी कर ली गयी हैं। उनका भव्य स्वागत व अभिनंदन करने को लेकर भाजपा कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों में विशेष उत्साह दिख रहा है।

भाजपा जिलाध्यक्ष विवेकानन्द मिश्र ने बताया कि हरीश द्विवेदी का बस्ती सीमा घघौवा से दोपहर 12 बजे प्रवेश होगा। इसके बाद उनका काफिला क्रमशः विक्रमजोत, छावनी, हर्रैया, कप्तानगंज, गोटवा, फुटहिया, बड़ेवन, कंपनी बाग, गांधीनगर, रोडवेज व दक्षिण दरवाजा तथा होटल बालाजी प्रकाश होते हुए सुयेश होटल के सभागार पहुंचेगा, जहाँ भव्य आभार व

अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

कार्यक्रम को ऐतिहासिक तथा भव्य बनाने के लिए सभी जनप्रतिनिधि, जिला पदाधिकारी, मंडल अध्यक्ष, शक्ति केंद्र संयोजक, प्रभारी तथा बूथ स्तर तक के कार्यकर्ताओं ने युद्धस्तर पर तैयारियाँ पूरी कर ली हैं। जिला महामंत्री अमृत कुमार वर्मा, प्रेम प्रकाश चौधरी, सुरेंद्र चौधरी, जिला मीडिया प्रभारी अजय पाल सिंह, नीरज त्रिपाठी, हनुमान प्रसाद भोलू, अश्विनी श्रीवास्तव सहित पार्टी के अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहेंगे।

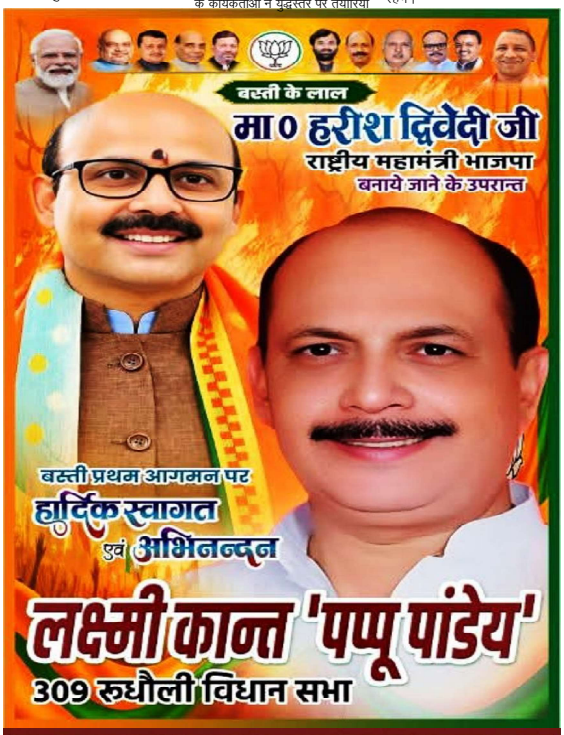

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"—वेंडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 31 अगस्त 2026 सोमवार

सम्पादकीय

शिक्षा व्यवस्था की विसंगतियां

नीति आयोग की हालिया रिपोर्ट हमारे नीति–नियंताओं को आईना दिखाने वाली है। चौंकाने वाली ये रिपोर्ट बताती है कि देश में नब्बे फीसदी से अधिक स्नातक ऐसी नौकरियां कर रहे हैं, जिसका उनकी डिग्री से कोई संबंध नहीं होता है। जाहिरा तौर पर यह आंकड़ा हमारी शिक्षा व्यवस्था की विसंगतियों को ही उजागर करता है। इसके मायने हैं कि आज भी महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा अन्य शिक्षण संस्थानों में ऐसी शिक्षा दी जा रही है ,जो मौजूदा आर्थिकी से नहीं जोड़ती। देश–दुनिया का मौजूदा आर्थिक परिदृश्य बिल्कुल बदल चुका है। सरकारी नौकरियां ना के बराबर हैं, मगर हर स्नातक उसके लिये आवेदन करता है। जबकि रोजगार बाजार में उतरने के लिये युवाओं के पास कौशल विकास, व्यावहारिक दक्षता, तकनीकी ज्ञान और कुशल प्रबंधन का अनुभव होना जरूरी है। दरअसल, अधिकांश शिक्षण संस्थानों में आज भी वर्षों पुराना वह पाठ्यक्रम पढ़ाया जा रहा है जो मौजूदा प्रतिस्पर्धी समय में रोजगार उपलब्ध कराने की गारंटी नहीं देता। इसके लिये जरूरी है कि युवाओं को उद्योग, बाजार व व्यावसायिक संस्थानों की जरूरतों के अनुरूप शिक्षा दी जाए। लेकिन विडंबना यह है कि तीन–चार साल के अध्ययन के बाद छात्रों को जो डिग्री मिलती है, वह उन्हें रोजगार के बाजार में कदमताल करने का हुनर नहीं देती। यह तभी संभव है जब हमारी शिक्षा, कौशल विकास व अर्थव्यवस्था में तारतम्य स्थापित हो सकेगा। लेकिन हर साल लाखों बीए, एम.ए. व अन्य मानविकीय विषयों की डिग्री हासिल करने वाले बेरोजगारों की पंक्ति में शामिल हो जाते हैं। यही वजह है कि देश में स्नातक बेरोजगारों का प्रतिशत देश की सामान्य बेरोजगारी दर से कहीं अधिक है। महिला स्नातकों की दर तो पुरुष स्नातकों से भी कहीं ज्यादा है। ऐसे में उस उच्च शिक्षा का क्या औचित्य जो युवाओं को रोजगार नहीं दे सकती। असल में, बदलते वक्त के अनुरूप युवाओं की शिक्षा में जो जरूरी बदलाव किए जाने चाहिए थे, वे अभी तक सिरे नहीं चढ़ पाये हैं।

दरअसल, हर युवा में कला–कौशल का एक विशिष्ट गुण होता है। उसका मूलभूत रुझान एक विशेष क्षेत्र में होता है। लेकिन इस गुण को न तो अभिभावक समझ पाते हैं और न ही शिक्षक। छात्र भेड़चाल में आकर शिक्षण संस्थानों में दाखिला लेते हैं। लेकिन यह उनकी रुचि का विषय नहीं होता है। कई अध्ययन बताते हैं कि अपनी रुचि के विषय में युवा बेहतर कार्य प्रदर्शन करते हैं। यह संभव नहीं कि हर छात्र डॉक्टर व इंजीनियर ही बने। लेकिन समाज में ऐसा करने की होड़ बनी हुई है। एक समय बैंकिंग, रेलवे आदि में भविष्य तलाशने की होड़ लगी। पिछले कुछ समय में कंप्यूटर साइंस में इंजीनियरिंग करने का फैशन चला। वैश्विक स्थितियों में बदलाव व एआई के वर्चस्व के चलते अचानक कंप्यूटर साइंस के क्षेत्र में नौकरियों में तेजी से कटौती हुई। लेकिन देश में हजारों शिक्षण संस्थान आज भी इस भेड़चाल में युवाओं को धकेल रहे हैं। विडंबना यह है कि हमारे नीति–नियंताओं ने दूरदर्शी दृष्टिकोण न अपनाते हुए, भविष्य की दीवार पर लिखी इबारत को नहीं पढ़ा। यही वजह है कि दुनिया में सबसे ज्यादा युवाओं का देश होने के बावजूद हम इस जनसांख्यिकीय लाभ उठाने में विफल रहे हैं। हमारे उद्योगों ने भी अपनी जरूरत के मुताबिक युवाओं को प्रशिक्षित करने के लिये इस बाबत चलाये जा रहे कार्यक्रमों में सहयोग नहीं किया। यही वजह है कि आज देश में कामचलाऊ इंटर्नशिप व अप्रेंटिसशिप का बोलबाला है। यदि हमारा निजी क्षेत्र इस दिशा में रचनात्मक पहल करता तो उसे बड़ी संख्या में अपनी जरूरतों के मुताबिक युवा प्रतिभाएं मिल सकती थीं। इसे दिशा देने में देश की प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थाओं आईआईटी व आईआईएम की बड़ी भूमिका हो सकती थी। याद रहे कि कौशल विकास का मतलब केवल एक सार्टिफिकेट हासिल करना नहीं है। देश को कौशल विकास से लैस युवाओं की जरूरत है। जो आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिये अनिवार्य शर्त भी है। नीति–नियंताओं को इस मामले में चीन की औद्योगिक व तकनीकी क्रांति से जुड़ी नीतियों से सीखने की आवश्यकता है। जरूरत इस बात की है कि हमारे स्कूल–कॉलेज से लेकर विश्वविद्यालयों तक में रोजगार से जुड़े पाठ्यक्रमों को तरजीह दी जाए।

जड़ों से उखड़ने की त्रासदी

देश में विकास का भूगोल भले ही अलग हो, लेकिन अपनी जड़ों से उखड़ने की त्रासदी हर दिशा में एक समान है। उत्तर भारत के मैदानी इलाकों और बिहार जैसे क्षेत्रों में लहलहाती बहुफसली कृषि भूमि एक्सप्रेसवे और अन्य बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए ली जा रही है, जिससे छोटी जोत वाले किसानों के सामने आजीविका का संकट खड़ा होता है। वहीं, राष्ट्र की बढ़ती ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए मध्य और पूर्वी भारत में कोयला तथा खनिजों का व्यापक खनन हुआ है, जिसने जंगलों और स्थानीय समुदायों पर गहरा प्रभाव डाला है। पश्चिमी भारत में 'स्वच्छ ऊर्जा' के नाम पर 'मेगा सोलर पार्कों' को लेकर पशुपालकों के पारंपरिक चरागाहों के उपयोग पर भी विवाद सामने आए हैं। दक्षिण में आइटी गलियारे के लिए भूमि परिवर्तन और पूर्वोत्तर में जलविद्युत परियोजनाओं तथा सीमांत सड़कों के विस्तार ने स्थानीय समुदायों के अधिकारों और पर्यावरण को लेकर बहस छेड़ दी है।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार, 2022–23 में देश के 45.8 फीसद कामगार कृषि तथा संबद्ध क्षेत्रों में लगे थे। वहीं, कृषि जनगणना 2015–16 के अनुसार, देश की लगभग 86 फीसद परिचालन भूमि जोत छोटे और सीमांत किसानों के पास थीं। इनकी उपजाऊ जमीन का अधिग्रहण केवल संपत्ति का सौदा नहीं, बल्कि पीढ़ियों की आजीविका को प्रभावित करने वाला फैसला है। वित्तीय साक्षरता के अभाव में नकद मुआवजा 'मुट्ठी की रेत' साबित हो सकता है और किसान कुछ वर्षों में फिर आर्थिक संकट में फंस सकता है। वहीं, भूमिहीन मजदूर और बटाईदार पुनर्वास की प्रक्रिया से अक्सर पर्याप्त रूप से नहीं जुड़ पाते। दूसरी ओर, कृषि भूमि पर कारपोरेट नियंत्रण का एक नया और परोक्ष स्वरूप भी दिखाई दे रहा है।

कंक्रीट के विस्तार से प्राकृतिक जल निकासी और स्थानीय पारिस्थितिकी पर भी दबाव बढ़ता है। 'प्रतिपूरक वनीकरण के बावजूद प्राचीन जंगलों के जटिल पारिस्थितिकी तंत्र को रातों–रात पुनर्जीवित नहीं किया जा सकता। यही कारण है कि आज महाराष्ट्र के 'थर्ड मुंबई' मेगा–सिटी से लेकर कर्नाटक के बिदादी तक, किसान भूमि अधिग्रहण और प्रस्तावित विकास माडल के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं।

विकास और मानवाधिकार एक–दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। सच्ची प्रगति वह है, जो एक्सप्रेसवे की तेज रफ्तार के साथ–साथ कतार में खड़े आखिरी इंसान का भी हाथ थामकर चले। देश को आर्थिक उड़ान के लिए कारखानों की जितनी जरूरत है, उतनी ही दरकार अन्नदाता के चेहरे पर सुकून की भी है। चमकते बुनियादी ढांचे और लहलहाते खेतों के बीच का मानवीय संतुलन ही एक नए, न्यायपूर्ण और सशक्त भारत की मजबूत नींव रखेगा।

नेपाल में तबाही : प्रकृति का कहर और मानवीय जिद

—ऋतुपर्ण दवे—

नेपाल में आई बाढ़ से हुई विध्वंसक तबाही ने पूरी दुनिया का ध्यान खींचा है। भले ही घटना प्राकृतिक रही लेकिन वास्तविक कारणों में कहीं न कहीं मानवीय जिद भी जरूर है। इस तबाही का केन्द्र बिन्दू तिब्बत (चीन) का ऊपरी पहाड़ी क्षेत्र रहा, जहां ल्हेंदे नदी के पास एक बड़े ग्लेशियर के ढहने से भारी सैलाब आया। इसकी धमक इतनी ज्यादा थी कि शुरू में भूकंप का भ्रम हुआ। हालांकि कुछ घंटों बाद भूकंप भी आया, जिसने एक नया खौफ पैदा कर दिया। इस आपदा का ऐसा खौफनाक रूप दिखा, जिसने हर तरफ सिर्फ मलबा, मौत, चीख–पुकार का मंजर दिखाया। नेपाल की भयावह तस्वीरों ने सबको हिला कर रख दिया। अभी मौत के प्रारंभिक आंकड़े भले ही कम (500 से अधिक) हों लेकिन ये कितना बढ़ेंगे इस बात का अंदाजा नहीं है। करीब 2000 से ज्यादा लोग लापता हैं। इसमें ज्यादातर भारतीय हैं, जिनकी संख्या 300 के लगभग है। इनमें कुछ तो प्रतिष्ठित आई.टी. कंपनी के हैं। अब तक 84 भारतीयों को सुरक्षित बचा लिया गया है। इनमें त्रिशूली–1 हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट के 63 कर्मचारी और तमिलनाडु के 21 लोग शामिल हैं।

एकाएक 26 अगस्त की सुबह बाढ़, मलबा ऐसे आया, जिसका किसी को अंदाजा नहीं था क्योंकि इतनी भारी बारिश भी नहीं हुई थी कि लोग सतर्क हो संभल सकें। चीन के तिब्बती क्षेत्र से सटे इलाकों में अचानक आए भारी मात्रा में पानी, बर्फ, चट्टानों और रेत–कीचड़ का मलबा नेपाल की ओर बढ़ा जिसने एकाएक भोटेकोशी नदी का जलस्तर चंद मिनटों में ही बेहद खतरनाक स्तर तक पहुंचा दिया। इसी के चलते इसे जल प्रलय भी कह रहे हैं। लोग कुछ समझ पाते, उससे पहले सुबह 9 बजे नदी में अचानक तेज उफान आया। इसके बाद तिमुरे, रसुवागढ़ी, स्याफ्रूबेसी और आसपास के इलाकों में नदी के किनारे बने मकान, सड़क, पुल और दूसरे रोजमर्रा के उपयोग के निर्माण चपेट में आ गए। त्रासदी यह कि पानी केवल नदी की सामान्य बाढ़ की तरह नहीं बढ़ा, बल्कि अपने साथ भारी मात्रा में तलछट, बड़े पत्थर और मलबा भी नीचे ले आया।

इससे नुकसान केवल जलभराव तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इमारतें और पुल–पुलिया भी बह गए। बेट्रावती से रसुवागढ़ी सीमा तक लगभग 42 किलोमीटर सड़क बाढ़ से बुरी तरह टूट–फूट गई और कंक्रीट के कई पुल भी बह गए। एकाएक आई बाढ़ की गति कितनी रही होगी, अंदाजा ही मुमकिन है क्योंकि त्रिशूली नदी पर गलछी में जलस्तर 30 मिनट में ही 9 मीटर तक बढ़ गया। मालखु में भी इसी दौरान करीब 7 मीटर की वृद्धि दर्ज की गई। यह वृद्धि सामान्य मानसूनी बाढ़ की तुलना में कहीं बहुत ज्यादा खतरनाक निकली। बाढ़ की लहर भोटेकोशी से आगे त्रिशूली नदी तंत्र में पहुंची। इससे रसुवा से नीचे की ओर नुवाकोट और धादिंग समेत कई इलाकों में नदी के किनारे बसे क्षेत्रों के लिए जोखिम बढ़ गया। कुछ जल निगरानी केंद्र भी बाढ़ के दौरान क्षतिग्रस्त हुए, जिससे वास्तविक समय में नदी की निगरानी का काम और भी कठिन हुआ।

स्थिति की भयावहता तब और बढ़ गई जब गुरुवार रात 9.18 बजे 3.2 तीव्रता का भूकंप आया, जिसका केंद्र 10 कि.मी. की गहराई पर था। इससे वहां बाढ़ का खतरा फिर मंडरा रहा है। इधर चीन ने बताया कि रसुवागढ़ी बॉर्डर से 18 कि.मी. ऊपर तिब्बत की ल्हेंदे नदी में एक नई बैरियर झील बन गई है जो लगभग 0.11 वर्ग कि.मी. में फैली है और करीब 200 करोड़ लीटर पानी जमा है जिसमें अगले 3 दिनों में 300 करोड़ लीटर और पानी आ सकता है। मतलब कि यह झील भी टूट सकती है। यदि ऐसा हुआ तो भोटेकोशी और त्रिशूली नदी में फिर अचानक बाढ़ आ सकती है। अभी नेपाल की ओर के ढलानदार भूभागों की बस्तियां, सड़कें, पुल, जलविद्युत परियोजनाएं और अन्य बुनियादी ढांचे तबाही की जद में हैं। तिब्बत में हिमस्खलन होने या ग्लेशियर झीलों के फटने पर नेपाल की ओर के निचले तटीय क्षेत्रों में समय–समय पर क्षति होना आम घटना है।

जानकार भी मानते हैं कि बार–बार हो रहे हादसों के पीछे नेपाल–चीन सीमावर्ती हिमालयी क्षेत्र की भौगोलिक बनावट के साथ–साथ ग्लेशियल झीलों की स्थितियों में होने वाले बदलाव ही कारण हैं। नेपाल की ओर ढलानदार क्षेत्र हैं जिनमें तमाम बस्तियां बसी हुई हैं। इसके चलते इन झीलों के फटने और हिमस्खलन की हमेशा आशंका बस्तियों में बनी रहती है। चूंकि ऊपर तिब्बती क्षेत्र में कई हिमताल हैं, जिनमें विभिन्न कारणों और पर्यावरणीय असंतुलन से पिघलन होता रहता है और इसके रौद्र रूप लेते ही ऐसी घटनाएं घटती हैं।

नेपाल की बार–बार की तबाही का कारण इसका भूगोल भी है। नेपाल बेहद कम दूरी में उच्च हिमालय से लेकर अपेक्षाकृत समतल तराई के मैदानों तक ढलानों वाले क्षेत्र में फैला हुआ है, जिससे ऊपर हुई बारिश का असर नीचे पड़ता है। बस इसी का पहले से पता लगाने और सतर्क रहने से काफी त्रासदियां रोकी जा सकती हैं। अभी अर्ली वाध्नग सिस्टम यानी पूर्वसूचना प्रणाली भी लगी थी, जो खुद चपेट में आ गई वरना काफी हद तक मानवीय क्षति को काबू किया जा सकता था। भविष्य में जोखिम वाले इलाकों की पहले से ही पहचान कर आपदा की प्रतीक्षा से बेहतर नदी किनारे की बस्तियों को थोड़ी सी भी आहट में हटा कर जन और धन दोनों की क्षति कम की जा सकती है। सच तो यह कि आपदा संभावित क्षेत्रों में यदि बस्तियां ही नहीं बसें तो इससे बेहतर कुछ हो नहीं सकता।

शहरों में इंसानों के लिये घटती जगह

—डा. पी.के. बाजपेई—

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस की पहल पर बैंगलोर में चर्च स्ट्रीट पर एक पायलट प्रोजेक्ट के तहत नवंबर 2020 और अप्रैल 2021 के बीच सप्ताहांत में 750 मीटर के हिस्से को मोटर गाड़ियों के लिए बंद कर दिया गया और इसके नतीजे चौंकाने वाले थे। पायलट प्रोजेक्ट के दौरान, आसपास के दुकानदारों का व्यवसाय बढ़ने के साथ–साथ हवा की गुणवत्ता में सुधार हुआ ही, पैदल चलने वालों की संख्या में औसतन 92 से 117 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी हुई। लोगों ने वाहनों के बजाय पैदल चलना और सार्वजनिक परिवहन का इस्तेमाल करना शुरू किया।

एक अच्छे व्यवस्थित शहर की परख इस बात से होनी चाहिए कि क्या कोई बच्चा सुरक्षित रूप से स्कूल जा सकता है, क्या कोई बुजुर्ग सड़क पर उतरे बिना बाजार पहुंच सकता है, क्या व्हीलचेयर इस्तेमाल करने वाला व्यक्ति बस स्टॉप तक पहुंच सकता है?

बढ़ता शहरीकरण सुविधाओं के लिहाज से बेहतर तो लगता है, लेकिन इसकी एक बड़ी कीमत चुकानी पड़ रही है। बुजुर्गों के टहलने, बच्चों के खेलने, दिव्यांगजनों के बाधामुक्त आवागमन और महिलाओं व आम नागरिकों के लिए पैदल चलने, घूमने व बैठने की जगहें उत्तरोत्तर सिकुड़ती जा रही हैं। परिणामस्वरूप, आए दिन बढ़ती दुर्घटनाओं और बीमारियों ने लोगों को अपने घरों तक सीमित रहने पर मजबूर कर दिया है। आज बच्चे खुले मैदानों में खेलने के बजाय मोबाइल गेम्स की तरफ उन्मुख हैं और महिलाएं स्क्रीन पर रील्स देखने में व्यस्त हो गई हैं। मोहल्ले की वे सड़कें, जो कभी बच्चों की किलकारियों, औरतों की बैठकों और बुजुर्गों की सांध्य–आवाजाही से गुलजार रहती थीं, आज मोटर वाहनों की चिल्ल–पों और अंधाधुंध दौड़–भाग से भयाक्रांत हो चुकी हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने 19 जून, 2026 के अपने फैसले में कहा कि 'तय फुटपाथों पर चलने का अधिकार एक बुनियादी अधिकार है', जो संविधान के अनुच्छेद 19(1)(द) के आने–जाने और जीवन की आजादी की संवैधानिक गारंटी से आता है। अतः 'पैदल चलने वालों के लिए खघस तौर पर दी गई जगह पर ट्रैफिक के बजाय पैदल यात्रियों को प्राथमिकता मिलनी चाहिए।'

कोर्ट ने जहां एक ओर सुरक्षित फुटपाथ देने और उन्हें बनाए रखने की सरकारी अधिकारियों की जिम्मेदारी निर्धारित की, वहीं दूसरी ओर उन्हें चलने योग्य, सुरक्षित व बाधामुक्त बनाने पर भी जोर दिया। यह फैसला शहरी नियोजन की इस बुनियादी सोच को चुनौती देता है कि सड़कें मुख्यतः गाड़ियों के लिए होती हैं। साथ ही पैदल चलने वालों को यातायात में बाधा की तरह देखा जाता है। सड़क परिवहन मंत्रालय के अनुसार, 2024 में 36,526 पैदल चलने वालों की सड़क दुर्घटनाओं में मृत्यु हुई, जो सड़क पर होने वाली कुल मौतों का 20.6 प्रतिशत है। इस तरह, हादसों से मरने वाले हर पांच में से एक व्यक्ति पैदल चलने वाला होता है। अक्सर हम टूटे हुए फुटपाथ, पार्क की गई कारों, फुटपाथ पर चलती मोटरसाइकिलों, रोजी–रोटी कमाने की जद्दोजहद करने वाले रेहड़ी या खोमचे वालों, बिना ढके नालों और रास्ते के बीच में लगे बिजली के खंभों से दो–चार होते हैं, जिनसे फुटपाथ का अस्तित्व ही संकट में पड़ जाता है।

विदेशों में पैदल पथ, उनके दोनों ओर की हरित पट्टिकाएं, खेलते बच्चे और मजे करते लोग शहर की खघूबसूरती में चार चांद लगा देते हैं। यूरोपीय देशों में सड़कों को कारों की स्पीड के बजाय लोगों के हिसाब से डिजाइन किया जाता है। सुरक्षित पैदल चलने और साइकिल चलाने के नेटवर्क, ट्रैफिक–शांत पड़ोस और पैदल चलने वालों के लिए बने टाउन सेंटर ने सक्रिय आवाजाही को शहरी जीवन का एक जरूरी हिस्सा बना दिया है।

पेरिस का '15–मिनट का शहर' सिद्धांत जरूरी सेवाओं को पैदल या साइकिल की दूरी पर रखने की कोशिश करता है। शहर ने साइकिल चलाने के बुनियादी ढांचे को काफी बढ़ाया है और सैकड़ों पैदल चलने वाली स्कूल सड़कें बनाई हैं। इसका मकसद गाड़ियों पर निर्भरता कम करना, हवा की गुणवत्ता सुधारना और रोजाना की शारीरिक गतिविधियों को शहरी जीवन का हिस्सा बनाना भी है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सुरक्षित पैदल चलने, शारीरिक सक्रियता, साफ हवा और सड़क सुरक्षा को स्वस्थ जीवन का आधार माना है। अगर दुनिया की आबादी ज्यादा शारीरिक रूप से सक्रिय हो, तो हर साल 4 से 5 मिलियन मौतों को रोका जा सकता है। इसलिए, सुरक्षित पैदल चलने की सहूलियत रोगों से बचाव का एक माध्यम बन जाती है। इससे ऊर्जा भी बचती है, खर्चा भी बचता है, प्रदूषण भी नहीं होता और सड़क पर जाम भी नहीं लगता है।

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस की पहल पर बैंगलोर में चर्च स्ट्रीट पर एक पायलट प्रोजेक्ट के तहत नवंबर 2020 और अप्रैल 2021 के बीच सप्ताहांत में 750 मीटर के हिस्से को मोटर गाड़ियों के लिए बंद कर दिया गया और इसके नतीजे चौंकाने वाले थे। पायलट प्रोजेक्ट के दौरान, आसपास के दुकानदारों का व्यवसाय बढ़ने के साथ–साथ हवा की गुणवत्ता में सुधार हुआ ही, पैदल चलने वालों की संख्या में औसतन 92 से 117 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी हुई। लोगों ने वाहनों के बजाय पैदल चलना और सार्वजनिक परिवहन का इस्तेमाल करना शुरू किया। चर्च स्ट्रीट की सफलता यह बताती है कि जब लोगों को सुरक्षित और आकर्षक सार्वजनिक जगह मिलती है, तो वे उसका इस्तेमाल करते हैं।

शहर में वेंडिंग जोन और पार्किंग स्थल नियत होने चाहिए, ताकि फुटपाथ पूरी तरह पैदल चलने वालों के लिए बचे रहें। यूटिलिटी पोल, ट्रांसफॉर्मर और दूसरे बुनियादी ढांचे से फुटपाथ पर रुकावट नहीं आनी चाहिए। एक अच्छे व्यवस्थित शहर की परख इस बात से होनी चाहिए कि क्या कोई बच्चा सुरक्षित रूप से स्कूल जा सकता है, क्या कोई बुजुर्ग सड़क पर उतरे बिना बाजार पहुंच सकता है, क्या व्हीलचेयर इस्तेमाल करने वाला व्यक्ति बस स्टॉप तक पहुंच सकता है?

—लेखक मानव विज्ञानी हैं।

युवा पीढ़ी की ऊर्जा को सही दिशा देने का गुरुत्व

—डा. सुधीर कुमार—

मौजूदा डिजिटल और एआई के युग में जेन–जी यानी नयी पीढ़ी गुरु–शिष्य संबंधों को नए नजरिए से देख रही है। बदलाव के इस दौर में सब सवालों के समाधान एक क्लिक उपलब्ध हैं। ऐसे में आज शिक्षक की भूमिका ज्ञान देने से अधिक मार्गदर्शक और संवादकर्ता की हो गई है। हालांकि तकनीकी क्रांति, कानूनी जागरूकता और समानता की भावना ने टीचर और विद्यार्थी के रिश्तों की प्रकृति बदली है। फिर भी विश्वास, सम्मान, सहानुभूति और प्रेरणा ही शिक्षक–छात्र संबंधों की मूल आत्मा हैं। 'गुरु गोविंद दोउ खड़े, काके लागूं पांय...'– कबीर का यह दोहा सदियों से भारतीय संस्कृति में शिक्षक की सर्वोच्च गरिमा का प्रतीक रहा है। किंतु, वर्ष 2026 की इस डिजिटल देहलीज पर जब हम 'जेन–जी' के आईने में शिक्षक दिवस की परिभाषा तलाशते हैं, तो परंपरा के यह मायने एक नए दौर से गुजरते दिखाई देते हैं। आज का विद्यार्थी केवल एक 'श्रोता' नहीं, बल्कि 'डिजिटल नेटिव' है, जो हर बात के पीछे का 'लॉजिक' मांगता है। ऐसे में यह सवाल प्रासंगिक है कि क्या डिजिटल युग में हमारे प्राचीन गुरु–शिष्य संबंध अपनी मूल आत्मा खो रहे हैं या एक नए स्वरूप में ढल रहे हैं?

शिक्षक दिवस अब केवल फूलों और ग्रीटिंग कार्ड्स के आदान–प्रदान का पर्व नहीं रहा, बल्कि यह उस बदलते हुए सामाजिक अनुबंध का मूल्यांकन करने का अवसर है, जो एक तरफ बौद्धिक स्वतंत्रता की मांग करता है, तो दूसरी तरफ आधुनिक विधिक ढांचे के तहत अधिकारों और दायित्वों की नई सीमाएं तय करता है। जेन–जी (जेन जेड) की मानसिकता पूरी तरह से पारदर्शी और लोकतांत्रिक संवाद पर आधारित है। सूचना बनाम ज्ञान के इस युग में, जब छात्रों के पास हर फैक्ट की जानकारी सेकंडों में उपलब्ध है, तब शिक्षक का काम डेटा रटाना नहीं, बल्कि उस डेटा को 'विज्डम' में बदलना है।

समानता के अधिकार की बात करें तो, जेन जी पदानुक्रमित व्यवस्था की बजाय सहयोगात्मक माहौल पसंद करती है। वे चाहते हैं कि कक्षा में उनकी बात सुनी जाए, उनके तर्कों को तवज्जो दी जाए और सीखने–सिखाने की प्रक्रिया दोतरफा संवाद पर आधारित हो। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षक की सार्थकता अब रौब या डर पर नहीं, बल्कि पारस्परिक सम्मान और अकादमिक सुगमता पर टिकी है।

जब हम शिक्षा के इस नए दौर को विधिक आईने से देखते हैं, तो कई संवेदनशील पहलू सामने आते हैं। आज डिजिटल क्लासरूम और सोशल मीडिया के प्रसार ने नई कानूनी दुविधाएं पैदा कर दी हैंय जैसे छात्र अक्सर कक्षाओं में शिक्षकों की अनधिकृत वीडियो रिकॉर्डिंग कर लेते हैं या मीम्स बनाकर उन्हें सोशल मीडिया पर वायरल कर देते हैं, जिससे शिक्षकों की गरिमा और 'राइट टू प्राइवेसी' का हनन होता है। इसके विपरीत, शिक्षकों द्वारा अत्यधिक सख्ती या ऑनलाइन ट्रोलिंग से छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर भी गंभीर असर पड़ता है। वर्तमान में भारत में आईटी अधिनियम और भारतीय न्याय संहिता के कुछ प्रावधान लागू होते हैं, लेकिन शिक्षा परिसरों के लिए किसी विशिष्ट 'डिजिटल बिहेवियर कोड' का अभाव है। भारतीय कानूनों विशेषकर आरटीई अधिनियम, 2009 और किशोर न्याय अधिनियम के तहत छात्रों पर किसी भी प्रकार की शारीरिक या मानसिक प्रताड़ना पूरी तरह से प्रतिबंधित और दंडनीय अपराध है। लेकिन जेन जी के दौर में अनुशासनहीनता का रूप बदल गया है। शिक्षकों के लिए मौखिक रूप से डांटना भी कई बार 'मानसिक उत्पीड़न' की श्रेणी में लाकर कानूनी नोटिस का कारण बन जाता है। इससे शिक्षकों के मन में एक अदृश्य भय पैदा हो गया है, जिससे वे कई बार विद्यार्थियों को सही दिशा देने से हिचकिचाते हैं।

वर्तमान स्थिति से निपटने के लिए एक नए 'एजुकेशनल हार्मनी एंड डिग्निटी एक्ट' की आवश्यकता पर दो अलग–अलग विचार हैं। पक्ष में तर्क है कि ऐसा संतुलित कानून छात्रों के अनुच्छेद 21 के अधिकारों के साथ–साथ शिक्षकों के सम्मान और पेशेवर सुरक्षा की गारंटी दे। वहीं, ये भी मानना है कि रिश्ते कानूनों से नहीं बल्कि संवेदनाओं और संवाद से तय होते हैं, और अत्यधिक कानूनी दांव–पेच क्लासरूम के माहौल को यांत्रिक बना सकते हैं।

विकसित देशों ने इस बदलाव को समय रहते समझ लिया था। फिनलैंड में शिक्षक और छात्र का संबंध समानता और आपसी सम्मान पर आधारित है, जहां अत्यधिक स्वायत्तता के साथ जेन जी पीढ़ी के मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देते हुए कोई कठोर कानून नहीं बल्कि परामर्श संस्कृति है। अमेरिका में 'स्टूडेंट कोड ऑफ कंडक्ट' बहुत सख्त हैं, जिसमें डिजिटल दुर्व्यवहार, फोन प्रतिबंध और शिक्षकों के खिलाफ आपत्तिजनक पोस्ट पर कड़ी कानूनी कार्रवाई के प्रावधान हैं। इसके विपरीत, जापान में 'सेनसेई' (शिक्षक) के प्रति सम्मान सर्वोच्च सांस्कृतिक मूल्य है, जिसके साथ तकनीकी शिक्षा का बेहतरीन संतुलन स्थापित किया गया है।

यदि शिक्षकों को जेन जी पीढ़ी के साथ एक स्वस्थ और सकारात्मक संबंध स्थापित करना है, तो उन्हें अपनी कार्यशैली में कुछ क्रांतिकारी बदलाव लाने होंगे, जिसमें 'बॉस' की जगह 'फैसिलिटेटर' बनना यानी अपनी बात थोपने के बजाय संवाद की संस्कृति को बढ़ावा देना और छात्र को यह अहसास कराना शामिल है कि शिक्षक उनका प्रतिद्वंद्वी नहीं बल्कि मार्गदर्शक हैय इसके साथ ही, एआई, एआर और डिजिटल टूल्स के साथ बड़ी सहजता से बड़ी हुई इस पीढ़ी के बीच तकनीकी रूप से दक्ष होकर अपनी शिक्षण शैली को रोचक बनाना होगा।

शिक्षक दिवस का यह नया स्वरूप हमें यह सिखाता है कि समय चाहे कोई भी हो, तकनीक चाहे कितनी भी आगे बढ़ जाए और पीढ़ी चाहे मिलेनियल्स से जेन जी या उससे आगे की क्यों न हो, एक अच्छे शिक्षक और छात्र के बीच का मूल संबंध कभी नहीं बदलता – वह है विश्वास, प्रेरणा और मानवीय स्पर्श का संबंध। आधुनिक तकनीक और वैस्टर्न मॉडल के बीच, भारतीय ज्ञान प्रणाली का 'गुरु–शिष्य परंपरा' वाला मूल्य ही हमें संतुलन दे सकता है।

यदि हमें डिजिटल युग में शिक्षा की पवित्रता बचाए रखनी है, तो तकनीक को अपनी सीमा में रखना होगा और कबीर के उस पारंपरिक स्पर्श को आधुनिक संवेदनाओं के साथ फिर से जीवित करना होगा, तभी 'गॉड' से 'मेंटॉर' तक की यह यात्रा सार्थक हो सकेगी। चाणक्य ने कहा था कि 'प्रलय और निर्माण गोद में खेलते हैं' – आज की जेन जी पीढ़ी उसी निर्माण की ऊर्जा है, जिसे एक शिक्षक ही सही दिशा दे सकता है।

—लेखक कुरुक्षेत्र विवि के विधि विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं।

राष्ट्रीय महामंत्री हरीश द्विवेदी का कप्तानगंज में होगा भव्य स्वागत– वी.सी. पाण्डेय

हरीश द्विवेदी का प्रथम आगमन कार्यकर्ताओं के लिए विशेष अवसर –वी.सी. पाण्डेय

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। भारतीय जनता पार्टी के नवनियुक्त राष्ट्रीय महामंत्री एवं असम प्रभारी हरीश द्विवेदी के राष्ट्रीय महामंत्री बनने के उपरांत अपने गृह जनपद में प्रथम आगमन को लेकर भाजपा कार्यकर्ताओं और समर्थकों में उत्साह का माहौल है। उनके स्वागत को ऐतिहासिक बनाने के लिए जिले के विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों में तैयारियां तेज हो गई हैं। इसी क्रम में कप्तानगंज विधानसभा क्षेत्र में भी उनके भव्य स्वागत की तैयारियां की जा रही है। वरिष्ठ भाजपा नेता वृंदावन चन्द्रभान पाण्डेय के दिशा निर्देश में कप्तानगंज विधानसभा क्षेत्र में राष्ट्रीय महामंत्री हरीश द्विवेदी का जोरदार स्वागत किया जाएगा। उन्होंने कहा कि हरीश द्विवेदी ने अपनी संगठनात्मक क्षमता, समर्पण और निरंतर परिश्रम के बल पर पार्टी में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां हासिल की हैं। राष्ट्रीय महामंत्री जैसे महत्वपूर्ण दायित्व पर उनका नियुक्ति बस्ती जनपद ही नहीं, बल्कि पूरे पूर्वांचल के लिए गौरव का विषय है।

भाजपा नेता वृंदावन चंद्रभान पाण्डेय ने कहा कि हरीश द्विवेदी का गृह जनपद में प्रथम आगमन कार्यकर्ताओं के लिए विशेष अवसर है। हरीश द्विवेदी लंबे समय से संगठन के विभिन्न दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन करते रहे हैं। उनकी कार्यशैली में संगठन को मजबूत करने, कार्यकर्ताओं को जोड़ने और पार्टी की विचारधारा को जन–जन तक पहुंचाने की स्पष्ट प्रतिबद्धता दिखाई देती है। वृंदावन चंद्रभान पाण्डेय ने भाजपा कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि राष्ट्रीय महामंत्री हरीश द्विवेदी के स्वागत कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पूरी ताकत के साथ जुटें और अधिक से अधिक संख्या में कार्यक्रम में पहुंचकर अपने लोकप्रिय नेता का अभिनंदन करें। उन्होंने कहा कि बस्ती की धरती अपने बेटे को राष्ट्रीय महामंत्री जैसी नई जिम्मेदारी मिलने पर गर्व महसूस कर रही है। हरीश द्विवेदी के स्वागत में कप्तानगंज विधानसभा क्षेत्र से भी बड़ी भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। स्वागत को लेकर कार्यकर्ताओं में खासा उत्साह देखने को मिल रहा है।

नेहरू तिराहे पर होगा राष्ट्रीय महामंत्री हरीश द्विवेदी का भव्य स्वागत–अभिनव उपाध्याय

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री पूर्व सांसद हरीश द्विवेदी के प्रथम आगमन को लेकर व्यापक तैयारियां की गई है। भाजपा नेता अभिनव उपाध्याय एवं आशीष शुक्ला ने बताया कि 31 अगस्त सोमवार को सायं 4 बजे रोडवेज नेहरू तिराहे पर हरीश द्विवेदी का भव्य स्वागत अभिनन्दन किया जायेगा। स्वागत अभिनन्दन तैयारी कार्यक्रम में उत्कर्ष शुक्ला ,सुनील पाण्डेय, आलोक पाण्डेय, पंकज चौधरी, आलोक हिंदुस्तानी, राहुल शुक्ला, पल्व श्रीवास्तव, सुधीर सिंह, अंबरीश त्रिपाठी, कृष्ण मुरारी, राजेश यादव, रुपेश, शाश्वत श्रीवास्तव, अमरददीप पाण्डेय, सहित अन्य कार्यकर्ता पूरी ताकत से लगे हैं। अभिनव उपाध्याय एवं आशीष शुक्ला ने संयुक्त रूप से कहा कि कार्यकर्ताओं के लिए यह गर्व का विषय है कि सामान्य से परिवार से निकल कर संगठन के विभिन्न पदों पर रहते हुए हरीश द्विवेदी का विश्व की सबसे बड़ी पार्टी भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री पद पर पहुँचना बस्ती के लिए बहुत ही गर्व का क्षण है, यह भाजपा में ही सम्भव है कि कोई कार्यकर्ता अपने परिश्रम और संगठन में निरंतर कार्य करते हुए आगे बढ़ सकता है।

शिक्षकों को स्वजन के निधन पर मिले 15 दिन का विशेष अवकाश

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। रविवार को टीचर्स सेल्फ केयर टीम के संस्थापक अध्यक्ष विवेकानंद की पहल पर जिला संयोजक प्रमोद कुमार ओझा के नेतृत्व में शिक्षकों के एक प्रतिनिधि मण्डल ने कैशलेस चिकित्सा, एस.बी.आई. एमओयू आदि के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रति आभार व्यक्त करने के साथ ही शिक्षकों की एक महत्वपूर्ण मानवीय मांग को लेकर भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष विवेकानंद मिश्रा को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन के माध्यम से मांग किया गया है कि शिक्षक अथवा स्टाफ के किसी निकटतम स्वजन के निधन की स्थिति में अंतिम संस्कार एवं आवश्यक पारिवारिक, धार्मिक संस्कारों के लिए 15 दिवस का विशेष अवकाश प्रदान किए जाने की व्यवस्था की जाए।

टीम के प्रवक्ता राजेश कुमार ने बताया कि वर्तमान में 14 आकस्मिक अवकाश में स्वजन के निधन जैसी अत्यंत दुखद एवं आकस्मिक परिस्थितियों में शिक्षक को परिवार के साथ आवश्यक दायित्वों के निर्वहन के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता। विशेषकर 13वें दिन होने वाले अंतिम संस्कार एवं अन्य पारिवारिक संस्कारों के कारण शिक्षकों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

टीचर्स सेल्फ केयर टीम ने भाजपा जिलाध्यक्ष विवेकानंद मिश्रा से अनुरोध किया कि वे शिक्षकों की इस मानवीय एवं न्यायसंगत मांग को प्रदेश सरकार के समक्ष प्रभावी ढंग से उठाते हुए सकारात्मक पहल करें, ताकि शिक्षक अपने पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन सम्मानपूर्वक कर सकें। विवेकानंद मिश्रा ने शिक्षकों की मांग को गंभीरता से सुना तथा उचित स्तर पर इस विषय को रखने का आश्वासन दिया।

ज्ञापन सौंपने वालों में टीचर्स सेल्फ केयर टीम के जिला सह संयोजक अवधेश कुमार ,रजनीश मिश्र राहुल राव लक्ष्मण लाल विनय पाण्डेय देवेंद्र यादव आदि शिक्षक उपस्थित रहे।

टीचर्स सेल्फ केयर टीम ने भाजपा जिलाध्यक्ष विवेकानन्द मिश्रा को सौंपा ज्ञापन

आम आदमी पार्टी की बैठक में बनी विधानसभा चुनाव की रणनीति

जनहित के सवालों को लेकर संघर्ष कर रही है 'आप'- डा. राम सुभाष वर्मा

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । आम आदमी पार्टी (आप) जिला कार्यकारिणी की मासिक बैठक रविवार को जिलाध्यक्ष डॉ. राम सुभाष वर्मा की अध्यक्षता में पाण्डेय स्कूल के निकट स्थित एक होटल के सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक में आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने और जनहित के मुद्दों पर संघर्ष तेज करने की रणनीति पर विचार किया गया।

जिलाध्यक्ष डॉ. राम सुभाष वर्मा ने कहा कि आम आदमी पार्टी लगातार जनहित के मुद्दों पर संघर्ष कर रही है। पार्टी ने पेपर लीक, बिजली संकट, स्कूलों की दुर्व्यवस्था और श्रीराम मंदिर में चंदा घोटाले जैसे कई मुद्दों पर सवाल उठाए हैं। कहा कि बूथ स्तर पर संगठन की मजबूती से ही चुनाव में निर्णायक जीत मिल सकेगी।

बैठक में जिला प्रभारी, जिला सह प्रभारी कुलदीप जासवाल, पतिराम आजाद, वीरेन्द्र यादव, श्याम नारायण चौधरी, इंद्रेश चौधरी ,विशाल चौधरी ,विकास चौधरी ,चौधरी माता प्रसाद वर्मा, अमरनाथ वर्मा आदि ने कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी पूरी मजबूती के साथ मैदान में उतरेगी। इसके लिए बूथ स्तर तक संगठन को मजबूत किया जाएगा और कार्यकर्ताओं को सक्रिय भूमिका निभाने के लिए तैयार किया जाएगा। बैठक में गायत्री चौधरी, रीता, ओम, दिवाकर चौधरी ,उमेश शर्मा, राम सजन सूर्यवंशी, वीरेंद्र यादव, आदि उपस्थित रहे।

शूटिंग बॉल एसोसिएशन जिला कार्यकारिणी का गठित

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। शूटिंग बॉल खेल को बढ़ावा देने और प्रतिभावान खिलाड़ियों को प्रदेश एवं राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में रविवार को महत्वपूर्ण पहल हुई। जेआरसी पूर्व माध्यमिक विद्यालय हड़ही में आयोजित बैठक में शूटिंग बॉल एसोसिएशन बस्ती की जिला कार्यकारिणी का गठन किया गया।

उत्तर प्रदेश शूटिंग बॉल एसोसिएशन के पर्यवेक्षक एवं संयुक्त सचिव संतोष सिंह की देखरेख में हुई बैठक में पदाधिकारियों का सर्वसम्मति से चयन किया गया। इसमें रणधीर सिंह को अध्यक्ष, राम सिंह, महंत राम वर्मा एवं सर्वेश मिश्र को उपाध्यक्ष, जयराम चौधरी को जिला सचिव, प्रभाकर ओझा को संयुक्त सचिव तथा अखिलेश सिंह को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया। वहीं साक्षी सिंह, दिनेश सिंह, अमित पांडेय एवं प्रेम कुमार

वर्मा को कार्यकारिणी सदस्य की जिम्मेदारी सौंपी गई। बैठक में पदाधिकारियों ने कहा कि जिले में शूटिंग बॉल खेल को ग्रामीण एवं विद्यालय स्तर तक पहुंचाने के लिए नियमित प्रशिक्षण शिविर और प्रतियोगिताओं का आयोजन कराया जाएगा। इसके साथ ही विद्यालयों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में छिपी खेल प्रतिभाओं को तलाशकर उन्हें बेहतर प्रशिक्षण और प्रतियोगिताओं में भाग लेने के अवसर उपलब्ध कराए जाएंगे। नवनियुक्त पदाधिकारियों ने कहा कि संगठन खिलाड़ियों में अनुशासन, खेल भावना और प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित करने के साथ उन्हें प्रदेश एवं राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए तैयार करेगा। उन्होंने उम्मीद जताई कि आने वाले समय में बस्ती के खिलाड़ी शूटिंग बॉल में जिले का नाम प्रदेश और राष्ट्रीय स्तर पर रोशन करेंगे।

इस अवसर पर ओमकार, विपिन वर्मा, सुशील कुमार, अमित, विपिन पाल आदि उपस्थित रहे।

मानसरोवर यात्रा पर गए नेपाल के 22 श्रद्धालु पांच दिन से लापता

संवाददाता–महराजगंज।नेपाल के पर्वतीय इलाकों में कुदरत द्वारा बरपाए गए कहर के बीच कैलाश मानसरोवर यात्रा पर निकले जिले के प्रधान संघ जिलाध्यक्ष एवं मिठौरा क्षेत्र के परसौनी प्रधान–प्रशासक अनिल जोशी के काठमांडू निवासी मौसा–मौसी समेत 22 श्रद्धालुओं का दल पिछले पांच दिनों से लापता है। बाढ़ व भूस्खलन की भीषण विभीषिका के बाद से ही इन श्रद्धालुओं से परिजनों का कोई संपर्क नहीं हो पा रहा है। इससे पूरा परिवार गहरे सदमे और आशंका में है। प्रधान संघ के जिलाध्यक्ष अनिल कुमार जोशी ने बताया कि उनके मौसा ऋषि बाबू पंत एवं मौसी शारदा देवी पंत मूल रूप से काठमांडू नेपाल के निवासी हैं।

हरीश द्विवेदी के स्वागत में युवा कार्यकर्ता निभाएंगे अहम भूमिका – सचिन सिंह

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री बनाए जाने के बाद पूर्व सांसद हरीश द्विवेदी का पहली बार सोमवार को जनपद में आगमन होने जा रहा है। उनके प्रथम आगमन को लेकर भाजपा कार्यकर्ताओं में उत्साह चरम पर है। भाजपा युवा मोर्चा के नेता सचिन सिंह की अगुवाई में हरीश द्विवेदी के भव्य स्वागत की तैयारियां की गई हैं। सचिन की अगुवाई में युवा कार्यकर्ता उनका जोरदार अभिनंदन करेंगे।

सचिन सिंह ने कहा कि हरीश द्विवेदी के राष्ट्रीय महामंत्री बनने से कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा का संचार हुआ है और उनके प्रथम आगमन को लेकर सभी में विशेष उत्साह है। उन्होंने कहा कि हरीश द्विवेदी का राष्ट्रीय महामंत्री जैसे महत्वपूर्ण दायित्व पर पहुंचना गौरव और उपलब्धि का विषय है। सांसद रहते हुए उन्होंने क्षेत्र के विकास, जनसमस्याओं और संगठन के हितों को मजबूती से उठाया। संगठन के विभिन्न दायित्वों का निर्वहन करते हुए उन्होंने अपनी सरल कार्यशैली, सहज व्यवहार और कार्यकर्ताओं से आत्मीय जुड़ाव की अलग पहचान बनाई है। सचिन सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिलने के बाद हरीश द्विवेदी का प्रथम आगमन कार्यकर्ताओं के लिए विशेष अवसर है। उनके स्वागत में युवा कार्यकर्ताओं की सक्रिय भागीदारी रहेगी। स्वागत कार्यक्रम को ऐतिहासिक और यादगार बनाने के लिए पूरी तैयारी की जा रही है।

भाजपा युवा कार्यकर्ताओं के अनुसार, हरीश द्विवेदी के आगमन को लेकर जिलेभर में उत्साह का माहौल है। जगह–जगह स्वागत की तैयारियां चल रही हैं और कार्यकर्ता उनके अभिनंदन के लिए उत्सुक हैं।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा नाम नीरज कुमार गुप्ता (NEERAJ KUMAR GUPTA) पुत्र शिव शंकर गुप्ता (SHIV SHANKAR GUPTA) पाण्डेय बाजार, पोस्ट– पुरानी बस्ती, जनपद बस्ती (उ.प्र.) पिन कोड 272002 का निवासी हूं।

पासपोर्ट में मेरा नाम नीरज गुप्ता अंकित हो गया है, जो कि गलत है। उसे सुधारकर नीरज कुमार गुप्ता (NEERAJ KUMAR GUPTA) पुत्र (SHIV SHANKAR GUPTA) कराया जाय।

चौथे दिन भी गंडक नदी में बहकर आईं 4 और लाशें

संवाददाता–महराजगंज। नेपाल में आई त्रासदी में लापता हुए कई लोगों का अब सुराग नहीं लगा है। अभी भी नेपाल से आ रहे पानी में लाशें बहकर भारत–नेपाल की सीमा पर बसे जिले में पहुंच रहे हैं। चौथे दिन रविवार को बड़ी गंडक (नारायणी) नदी में चार शव बहकर आए। छितौनी तटबंध के भेड़ियारी ठोकर नंबर तीन के समीप एसडीआरएफ की टीम ने दो महिलाओं और दो पुरुषों के शव नदी से बरामद किए। इन्हें मिलाकर कुशीनगर में अब तक 13 और महराजगंज में चार यानि कुल 17 शव बरामद हो चुके हैं। इन्हें सुरक्षित मोर्चरी में रखवा दिया गया है। पोस्टमार्टम–डीएनए सैंपलिंग के बाद महराजगंज में मिले चार शव नेपाल को सौंप दिए गए हैं। कुशीनगर में रविवार को एसडीआरएफ की टीम भेड़ियारी ठोकर नंबर तीन के समीप नदी में निगरानी कर रही थी। इसी दौरान पानी में चार शव दिखाई दिए। टीम ने नदी में उतरकर दो महिलाओं और दो पुरुषों के शवों को बाहर निकाला। पुलिस ने आवश्यक लिखा–पढ़ी के बाद चारों शवों को मोर्चरी में भेज दिया। चार दिन में भेड़ियारी में 11 और कुल 13 शव आ चुके हैं, जबकि महराजगंज में चार शव बरामद हुए हैं। कुशीनगर में मोर्चरी फुल होने से बाकी शवों को गोरखपुर भेजवा दिया गया है। अब तक एक भी शव की पहचान नहीं हुई है।

अदालती नोटिस

सम्मन बरगज इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाप्ता 200 ई0)

वाद सं0– 5298 / 2025

T 202517140205298

धारा 116 उ0प्र0रा0सं0–2006

अदालत– श्रीमान उप जिलाधिकारी भानपुर महोदय बस्ती जिला बस्ती

राम विलास

बनाम

फूलमती आदि

बावत ग्राम बहेरिया तप्पा सिकन्दरपुर परगना बस्ती पूरब तहसील भानपुर जिला बस्ती

1. फूलमती पत्नी श्रीराम 2. शिवनाथ पुत्र श्रीराम 3. योगेन्द्र पुत्र श्रीराम निवासीगण बहेरिया तप्पा सिकन्दरपुर परगना बस्ती पूरब तहसील भानपुर जिला बस्ती

तारीख पेशी 17–09–2026

वाजेह हो कि ने आपके नाम एक नालिस बाबत दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 17 माह 09 सन 2026 ई0 बवक्त 10 बजे दिन बमुकाम असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाव ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन बरगज इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाप्ता 200 ई0)

निगरानी सं0–

धारा 210 उ0प्र0रा0सं0–2006

अदालत– श्रीमान अपर आयुक्त (न्यायिक) महोदय बस्ती जिला बस्ती

अमित कुमार आदि

बनाम

आशा देवी आदि

बावत ग्राम मनहनडीह तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरब तहसील व जिला बस्ती

1. आशा सिंह पत्नी नरायन सिंह निवासी पिपराजती तप्पा सिकन्दरपुर परगना बस्ती पूरब तहसील भानपुर जिला बस्ती 2. रियाज अहमद पुत्र मो0 अब्बासी निवासी शिवा कालोनी बस्ती खास तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरब तहसील व जिला बस्ती 3. अब्दुल वहीद पुत्र वहीदुल्लाह निवासी माली टोला तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरब तहसील व जिला बस्ती 4. रणजीत पुत्र राजाराम निवासी छिहुलिया तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरब तहसील व जिला बस्ती 5. राकेश कुमार पाण्डेय पुत्र बलराम निवासी अस्पताल चौराहा तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरब तहसील व जिला बस्ती 6. सरकार उ0प्र0 जरिये जिलाधिकारी बस्ती

तारीख पेशी 16–09–2026

वाजेह हो कि ने आपके नाम एक नालिस बाबत दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 16 माह 09 सन 2026 ई0 बवक्त 10 बजे दिन बमुकाम असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाव ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलाल करना चाहते हों पेश करें। आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया। – द0 हाकिम

अदालती नोटिस

न्यायालय सिविल जज (सी0डि0) महोदय सिद्धार्थनगर स्थान द्वारा निकाली गयी उद्घोषणा

प्रकीर्ण उत्तराधिकार वाद संख्या 269 / 2026

1–उर्मिला उम्र लगभग 55 वर्ष पत्नी विजय कुमार 2. अमृता पासवान उम्र लगभग 21 वर्ष पुत्री विजय कुमार 3. राजीव पासवान उम्र लगभग 20 वर्ष पुत्र विजय कुमार 4. अश्विन पासवान उम्र लगभग 17 वर्ष पुत्र विजय कुमार नावालिग जरिये संरक्षिका वाद मित्र उर्मिला माता निवासीगण काशीराम आवास कालोनी नगर पालिका परिषद सिद्धार्थनगर तप्पा थरौली पोस्ट सिद्धार्थनगर परगना व तहसील नौगढ़ जिला सिद्धार्थनगर

...आवेदकगण

बनाम

इस्टेट

तारीख पेशी– 21.09.2026

प्रा0 पत्र अन्तर्गत दफा 372 भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम

अपने पति / पत्नी मृतक विजय कुमार पासवान को देय ऋण और प्रतिभूतियों को वसूल करने के लिये प्रमाण पत्र की अभिप्राप्ति के लिये सन 1886 ई0 के अधिनियम 7 के अधीन उत्तराधिकार का आवेदन के लिये।

चूंकि ने प्रमाण पत्र को अभिप्राप्ति के लिये आवेदन दिया है और सन 2026 के 09 के 21 दिवस आवेदन को सुनवाई के लिये नियत हुआ है। अतः यह उदघोषण निकाली जाती है कि जिस किसी को उक्त आवेदन के सम्बन्ध में आपत्ति हो वह स्वयं या अभिवक्ता द्वारा ..10 बजे पूर्वान्ह न्यायालय सिविल जज (सी0डि0) महोदय सिद्धार्थनगर में नियत दिनांक पर उप संजात होकर अपनी आपत्ति पेश करें। उक्त दिनांक के अवसान पर फिर किसी की आपत्ति न सुनी जायेगी और आवेदन के सम्बन्ध में यथोचित आदेश पारित होगा। 2026 के 08 के 27 दिवस को दिनांकित।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

न्यायालय सिविल जज (सी0डि0) महोदय सिद्धार्थनगर स्थान द्वारा निकाली गयी उद्घोषणा

प्रकीर्ण उत्तराधिकार वाद संख्या 270 / 2026

1—श्रीमती कमलावती उम्र करीब 55 वर्ष पत्नी शिवगोविन्द 2. श्रीमती कुशलावती उम्र करीब 52 वर्ष पत्नी सियाराम निवासीगण ग्राम धन्धरा तप्पा बुड़ढी परगना बांसी पश्चिम तहसील इटवा जिला सिद्धार्थनगर

...आवेदकगण

बनाम

इस्टेट

तारीख पेशी– 21.09.2026

प्रा0 पत्र अन्तर्गत दफा 372 भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम

अपने सास/बहू मृतक श्रीमती इन्द्रावती देवी को देय ऋण और प्रतिभूतियों को वसूल करने के लिये प्रमाण पत्र की अभिप्राप्ति के लिये सन 1886 ई0 के अधिनियम 7 के अधीन उत्तराधिकार का आवेदन के लिये।

चूंकि ने प्रमाण पत्र को अभिप्राप्ति के लिये आवेदन दिया है और सन 2026 के 09 के 21 दिवस आवेदन को सुनवाई के लिये नियत हुआ है। अतः यह उदघोषण निकाली जाती है कि जिस किसी को उक्त आवेदन के सम्बन्ध में आपत्ति हो वह स्वयं या अभिवक्ता द्वारा ..10 बजे पूर्वान्ह न्यायालय सिविल जज (सी0डि0) महोदय सिद्धार्थनगर में नियत दिनांक पर उप संजात होकर अपनी आपत्ति पेश करें। उक्त दिनांक के अवसान पर फिर किसी की आपत्ति न सुनी जायेगी और आवेदन के सम्बन्ध में यथोचित आदेश पारित होगा। 2026 के 08 के 27 दिवस को दिनांकित।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

वाद के निपटारे के लिये सम्मन (आदेश 5 के नियम 1 और 5 व्या0प्र0 संहिता 1908)

मूलवाद संख्या 102 / 2026

न्यायालय– श्रीमान अपर सिविल जज (जू0डि0) कक्ष सं0– 1 स्थान–नौगढ़ जिला– सिद्धार्थनगर

अब्बू बकर आदि

बनाम

गयासुद्दीन आदि

1. गयासुद्दीन पुत्र हफीजुल्लाह साकिन वर्डपुर नं0–1 टोला पोखरभिटवा पोस्ट पचगवां तप्पा घोष परगना व तहसील नौगढ़ जिला सिद्धार्थनगर

तारीख पेशी 17–09–2026

प्रतिवादी ने आपके विरूद्ध के लिये वाद संस्थित किया है। आपको इस न्यायालय में दिनांक 17–09–2026 को दिन में 10 बजे वाद का उत्तर देने के लिये उपसंजात (हाजिर) होने के लिये समन किया जाता है। आप न्यायालय में स्वयं या किसी ऐसे अधिवक्ता प्लीडर द्वारा उप संजात हो सकते हैं। जिसे सम्यक अनुदेश दिये गये हों और जो बात से सम्बंधित सभी सारवान प्रश्नों का उत्तर दे सके या जिसके साथ ऐसा कोई व्यक्ति हो जो ऐसे सब प्रश्नों का उत्तर दे सके न्यायालय में आपके उप संजात के लिये जो दिन नियत किया गया है वह इस वाद के अन्तिम निपटारे के लिये नियत दिन है। इसलिये आपको उस दिन अपने उन सब साक्षियों को या उन सब दस्तावेजों को पेश करने के लिये तैयार रहना चाहिये जिन पर आप अपनी प्रतिरक्षा के लिये निर्भर रहना चाहते हैं।

आपको सूचित किया जाता है कि यदि अगर ऊपर बतायी गयी तारीख को इस न्यायालय में उपसंजात नहीं होंगे तो वाद की सुनवाई और उसका निपटारा आपकी अनुपस्थिति में किया जायेगा।

यह आज तारीख को मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दिया गया है।

न्यायाधीश

अदालती नोटिस

वाद की खारिजी को अपास्त किये जाने के आदेश को अभिप्राप्ति के लिये आवेदन की सूचना (आदेश 9, नियम 9, (2) व्य0 प्र0 संहिता 1908)

न्यायालय– श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) महोदय सिद्धार्थनगर जिला–सिद्धार्थनगर

प्रकीर्णवाद सं0 100 / 2024

मुन्नी देवी आदि

बनाम

मोती आदि

2. सतीश उम्र करीब 40 वर्ष पुत्र मोती 4. सनीष उम्र करीब 21 वर्ष पुत्र सतीष 6. गुड्डू उम्र करीब 31 वर्ष पुत्र स्व0 जगदीश 8. रुकमणि उम्र करीब 49 वर्ष पत्नी स्व0 जगदीश 10. बबीता उम्र करीब 22 वर्ष पुत्री स्व0 जगदीश 12. लक्ष्मी उम्र करीब 19 वर्ष पुत्री स्व0 जगदीश साकिन गनेशपुर पोस्ट परसा तप्पा खजहनी परगना नौगढ़ तहसील शोहरतगढ़ जिला सिद्धार्थनगर

तारीख पेशी 11–09–2026

चूंकि पूर्वोक्त वादी (गण) आवेदक (गण) ने इस न्यायालय में एक आवेदन उपरिनामांकित वाद की खारजी अपास्त करने के आदेश की अभिप्राप्ति के लिये इस न्यायालय के निर्देशानुसार सन 2026 मास के 09 दिवस 11 को दिवस को पेश किया है। अत एव आपको सूचना दी जाती है कि इस न्यायालय में 2026 के 09 के 11 दिवस को स्वयं या इस न्यायालय के अधिवक्ता या सम्यकरूपेण अधिकृत मुख्तार द्वारा जो इस बात के तथ्यों की जानकारी रखता हो उप संजात होकर हेतु (यदि कोई हो) सन्दर्शित करें कि उपरिनामांकित का आवेदन क्यों न मन्जूर किया जाय।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज 20 के के दिवस को निकाली गयी। –द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन बरगज इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाप्ता 200 ई0)

क0 वाद सं0–D 202517630001827

धारा 30 (1) उ0प्र0रा0सं0–2006

अदालत– श्रीमान अपर जिलाधिकारी महोदय सिद्धार्थनगर

क्लाम

बनाम

सरकार

बावत ग्राम सिरिसिया तप्पा सेहरी परगना रसूलपुर तहसील डुमरियागंज जिला सिद्धार्थनगर

1. श्रीमती मैनाज पत्नी मुजफ्फर 2. सफीउल्लाह पुत्र मेंहदी 3. इब्बन अली पुत्र हुसेन अली समस्त निवासीगण ग्राम सिरिसिया तप्पा सेहरी परगना रसूलपुर तहसील डुमरियागंज जिला सिद्धार्थनगर

तारीख पेशी 02–09–2026

वाजेह हो कि ने आपके नाम एक नालिस बाबत दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 02 माह 09 सन 2026 ई0 बवक्त 10 बजे दिन बमुकाम असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाव ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

नाम सुधार सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है मैं, अमित कुमार पाण्डेय, पुत्र जगदीश प्रसाद पाण्डेय, निवासी ग्राम–बकैनिया द्वीप, पोस्ट–मरवटिया बाबू, जिला– बस्ती (उ.प्र.) का निवासी हूं। मेरे पुत्र के आधार कार्ड संख्या 3725–0921–8827 में नाम आयान पाण्डेय अंकित है, जो गलत है। जबकि मेरे पुत्र के जन्म प्रमाण पत्र में नाम अरिहन्त पाण्डेय (ARIHANT PANDEY) अंकित है, जो सही है। उसे आयान पाण्डेय से सुधारकर अरिहन्त पाण्डेय (ARIHANT PANDEY) कराया जाय।

दैनिक भारतीय बस्ती

संस्थापक सम्पादक स्व. दिनेश चन्द्र पाण्डेय

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रबन्ध सम्पादक–दिनेश सिंह

संयुक्त सम्पादक–प्रदीप चन्द्र पाण्डेय

अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय– चतुर्मुखी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या–फैजाबाद

लखनऊ कार्यालय– आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।

गोरखपुर कार्यालय– इलाहीबाग गोरखपुर।

मो0 9336715406, 8400925463

ई.मेल bhartiyabasti@gmail.com

dainikbhartiyabasti@gmail.com

आदरणीय
हरीश द्विवेदी जी
को भारतीय जनता पार्टी के
राष्ट्रीय महामंत्री
के रूप में नियुक्त किए जाने पर
हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन
वैभव चतुर्वेदी
313 विधानसभा
खलीलाबाद

बस्ती के लाल
मा० हरीश द्विवेदी जी
राष्ट्रीय महामंत्री भाजपा
बनाये जाने के उपरान्त
बस्ती प्रथम आगमन पर
हार्दिक स्वागत
एवं अभिनन्दन
प्रबल मालानी
नगर पंचायत अध्यक्ष-बभनान
सदस्य जिला कार्यसमिति भाजपा, बस्ती

मा० हरीश द्विवेदी जी
को राष्ट्रीय महामंत्री भाजपा
बनने के उपरान्त
बस्ती प्रथम आगमन पर
हार्दिक स्वागत
एवं अभिनन्दन
हरिद्वार मिश्रा
विधानसभा 307 हर्रैया
प्रधान संघ अध्यक्ष- परशुरामपुर
ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि, परशुरामपुर

आदरणीय
हरीश द्विवेदी
को भारतीय जनता पार्टी के
राष्ट्रीय महामंत्री
के रूप में नियुक्त किए जाने पर
हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन
समाजसेवी
तेजा जी
विधायक प्रत्याशी
विधानसभा क्षेत्र महादेवा
हरीश द्विवेदी

भाजपा
भाजपा के नव नियुक्त राष्ट्रीय महामंत्री आदरणीय
मा. हरीश द्विवेदी जी
के प्रथम जनपद आगमन पर
हार्दिक स्वागत एवं
अभिनन्दन
अभिषेक दुबे
प्रदेश कार्यसमिति सदस्य
युवा मोर्चा भाजपा
अनिल दुबे
ब्लाक प्रमुख कुदरहा, बस्ती

भाजपा के नवनियुक्त राष्ट्रीय महामंत्री
मा. हरीश द्विवेदी जी के
बस्ती जनपद प्रथम आगमन पर
हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन
शिवश्याम चौधरी
प्रधान गोटवा

बस्ती के लाल
मा.हरीश द्विवेदी जी
को
राष्ट्रीय महामंत्री भाजपा
बनाए जाने पर
हार्दिक बधाई एवं
शुभकामनाएं
बालकृष्ण त्रिपाठी 'पिंटू बाबा'
सौजन्य से- टीम शिक्षा शक्ति नगर पंचायत गायघाट-बस्ती

आदरणीय
श्री हरीश द्विवेदी जी
को भारतीय जनता पार्टी के
राष्ट्रीय महामंत्री
के रूप में नियुक्त किए जाने पर
हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन
वृन्दावन चन्द्रभान पाण्डेय बी.सी. पाण्डेय
वरिष्ठ भाजपा नेता

मा. हरीश द्विवेदी जी को
राष्ट्रीय महामंत्री भाजपा
हार्दिक स्वागत एवं
अभिनन्दन
विधान परिषद
की पहचान
हरीश सिंह
देवेन्द्र प्रताप सिंह
सदस्य विधान परिषद